आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 15 | उदयपुर शनिवार 15 अगस्त 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अयोध्या में राम जन्मभूमि मन्दिर शिलान्यास

राममय अयोध्या और अयोध्यामय पूरा विश्व हुआ

-डॉ. तुक्तक भानावत-

अन्ततोगत्वा वह शुभ स्वर्णिम दिन आ ही गया जब 05 अगस्त 2020 को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण की आधारशिला रखी। इस अत्यन्त पावन अवसर को

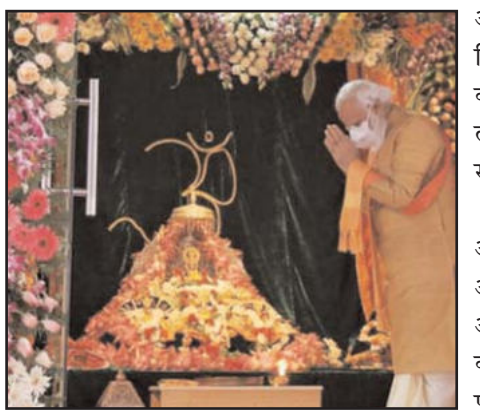

देश की जनता ने ही नहीं, पूरे विश्व के लोगों ने अपनी उत्साहित पलकों में कैद किया।

कोरोना के संकट को देखते हुए अयोध्या की जनता भी अपने घरों में ही रही और इस अवसर पर अनुशासनबद्ध उपस्थिति भी जितनी आवश्यक थी, उतनी ही रही पर पूरे शुभ एवं मांगलिक विधिविधान के साथ जो कार्यक्रम रहा वह शिलालेखीय उपलब्धि ही बन गया।

शिलान्यास पूर्व मोदी ने यादगार रूप में पारिजात का पौधा लगाया जो सैंकड़ों वर्षों तक अपने अस्तित्व का परिदर्शन दिये सबकी आंख का तारा बना रहता है।

पहलीबार किसी प्रधानमंत्री के रूप में मोदी ने हनुमानगढ़ी जाकर हनुमानजी के दर्शन किये जो सदैव रामचरण सेवक बनकर वनवासकालीन कठिन दौर में अतुलनीय, अकल्पनीय और अविस्मरणीय कार्य निष्पादित कर माता सीता की खोज करते अन्त तक लंका संहार रावण वध में सम्बल बने।

माना जाता है कि आज भी हनुमानजी अयोध्या के रक्षक बने अपने दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं इसीलिए उसी परम्परा का पोषण करते मोदीजी हनुमानजी से विधिपूर्वक स्वीकृति स्वरूप आशिष लेने पहुंचे। इसके बाद 27 वर्ष से रामलला के अस्थायी बने मन्दिर (टेंट) में साष्टांग नमन किया। योगशास्त्र के अनुसार इस दंडवत में सिर से लेकर हाथ, पांव, हृदय, आंख, जांघ, वचन और मन से युक्त अंगों में षड्चक्रों को जमीन से स्पर्शित कर लेटा जाता है जो सर्वस्व समर्पण का प्रतीक है।

समारोह के अंतिम चरण में मोदीजी ने अपना उद्बोधन भी राजनीति से सर्वथा विलग 'सियाराम की जय' के साथ दिया जिसे पूरे विश्व ने प्रशंसापूर्वक सराहा और ऐतिहासिक करार दिया।

अपने उद्बोधन में मोदीजी ने लगभग सवा दो सौ बार भगवान श्रीराम का नाम लेते कहा कि राम हमारी संस्कृति, आस्था, राष्ट्रीय चेतना और भारतीयता के आदर्श उपहार तथा उपकार हैं। शास्त्रों और लोक में अनेक महिमाओं से भगवान राम का बखान, उनकी स्तुति और गुणगान किया गया है। उन्हें सूर्य के समान प्रकाशपुंज, पृथ्वी के समान क्षमाशील, वृहस्पति के समान बुद्धिचेता और इन्द्र के समान यशस्वी कहा गया है।

- शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (105) : डॉ. महेन्द्र भानावत

हास्य रसावतार व्यासजी के साथ लोटपोट हम कवि-मित्र

''कविता में यदि राग और रस हो तो वह कविता चाहे पुरानी हो या नई, तुकांत हो या अतुकांत श्रोता पसंद कर लेंगे पर अब कवि ऐसी कविताएं पढ़ने लग गये जिनमें न राग होती है, न रस ही। यदि कोई श्रुत मधुर नहीं है तो उसमें हल्कापन आ जाता है और श्रोता के साथ साधारणीकरण नहीं होता। कविता बोझिल करने के कारण ही जैसे भाषण की दुर्गत हुई वैसी ही कविता की दुर्गति हुई।''

हास्यरस के ख्यात कवि गोपालप्रसाद व्यास एकबार उदयपुर नोबल्स कॉलेज में आयोजित कवि सम्मेलन में आये। व्यासजी स्वभाव से ही मस्त और मौजी तबीयत के दिलदार व्यक्ति थे। वे पत्नीवाद के प्रवर्तक कहे जाते हैं। साहित्य में उन्होंने पत्नीवाद को स्थापित किया। पत्नियों और महिलाओं को लेकर उन्होंने सर्वाधिक कविताएं लिखीं। कवि सम्मेलनों में भी लोग ऐसी ही कविताएं सुनकर आनन्दित होते थे। उनकी 'पत्नी को परमेश्वर मानो' तथा 'सलवार चली, सलवार चली' जैसी कविताएं तब लोकप्रियता के चरम पर थीं।

25 मई 1982 को उदयपुर में गीतकार किशन दाधीच ने कुछ मित्रों के साथ व्यासजी को अपने निवास पर चायपानी के लिए आमंत्रित किया। मैं भी उसमें शरीक हुआ। मैंने तो सूरजपोल स्थित देवस्थान विभाग के अतिथि विश्राम गृह में व्यासजी से एक लम्बा साक्षात्कार भी लिया था। बाद में भी उनसे मेरा सम्पर्क बना रहा।

किशन दाधीच के घर व्यासजी के साथ देर तक हंसी दिल्लगी, ठट्ठा भरी बातें होती रहीं। उनकी हर बात में रस वर्षा होती रही। खूब ठहाके लगते रहे। बातों ही बातों में उन्होंने अनेक बातें ऐसी कीं जो उनके साहित्यिक मिजाज के अलावा तत्कालीन सामाजिक तथा राजनीतिक सरोकारों तथा मित्रों की आपसी चुहलबाजी से भी सम्बन्धित थीं। ऐसे कुछ घटना-प्रसंगों की चासनी पाठक भी लें सो यहां प्रस्तुत है।

(1) जब तान अछूत हो गई :

व्यासजी ने सुनाया, 'जब मैं छोटा था तो छुआछूत बड़ी भयंकर बीमारी थी। आदमी का छूना तो समझ में आता था मगर हमारी तो तान ही अछूत हो गई। हुआ यह कि कोई तेरह-चौदह वर्ष की उम्र में हमने लिखना शुरू कर दिया। हमने 'पद्मिनी' नाम से एक नौटंकी लिखी। ब्रज के रसिया और होली पर जो तान गाई जाती है उस तान में हमने बहुत लिखा। हमारी लिखी तान पर मथुरा में पहले साल ब्राह्मणों ने गाया। दूसरे साल अहीरों ने गया। तीसरे साल जब भंगियों ने गाया तो लोगों ने कहा कि तान अछूत हो गई। जब तान हमारी अछूत हो गई तो उसके बाद किसी ने नहीं गाया।'

यह घटना बहुत छोटी है मगर बड़ी मार्मिक और सामाजिक जाति व्यवस्था को लेकर चोटिल करने वाली है। ऐसी व्यवस्थाओं के रहते बहुत सारे अच्छे कार्यों, सामाजिक सौहार्दों तथा आपसी हेलमेल और भाईचारा जैसे मानवीय गुणों का भी आघात होता परिलक्षित होता है। आजादी के बाद भी स्थितियां बहुत अधिक उज्ज्वला नहीं बनी हैं।

(2) ऐतिहासिक छड़ी :

व्यासजी अपने पास एक छड़ी रखते थे। जब सब ठहाका लगा रहे थे तो व्यासजी एक और ठहाका सुनाते अपने पास की छड़ी दिखाते बोले, 'क्या बतायें भाई, हमारी तो यह छड़ी ही ऐतिहासिक है। पहले जो छड़ी हमारे पास थी, वह तो महान ऐतिहासिक थी। वह छड़ी चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की थी। उन्होंने उसे बापू को देनी चाही तो बापू बोले, मुझको इतनी अच्छी छड़ी की आवश्यकता नहीं है। ठीकठाक छड़ी ही मेरे लिए ठीक रहेगी पर राजगोपालाचारी माने नहीं और वह छड़ी बापू को देदी।

बापू के देहावसान के बाद मुझको एक छड़ी की जरूरत पड़ी तो दैनिक हिन्दुस्तान के कार्यालय में बापू के सुपुत्र देवदास गांधी ने मुझे वह छड़ी दे दी और बताया कि यह छड़ी बापू को राजगोपालाचारी ने दी है। यह ऐतिहासिक छड़ी है। इसे सम्भालकर रखना। मैंने उस छड़ी को सम्भाल कर रखली।

अभी पिछले दिनों बदायू में जब कवि सम्मेलन हुआ तो मेरे पास वह छड़ी थी पर जब किसी प्रसंग में छड़ी की जरूरत पड़ी तो एक सज्जन ने आव देखा न ताव मेरे हाथ से वह छड़ी छीन ली और कवियों की पिटाई कर दी। यही नहीं, वह छड़ी ही गायब कर दी। छड़ी खो जाने का मुझे सख्त अफसोस हुआ तो मैंने बनारसीदासजी चतुर्वेदी को यह घटना लिख भेजी। इस पर उन्होंने मुझे अपनी ही छड़ी दे डाली। इस प्रकार मेरे पास यह जो छड़ी है वह भी कम ऐतिहासिक नहीं है।'

(3) पत्नीवाद गोरी सरकार की देन :

जब मैंने पत्नीवाद के सम्बन्ध में बात छेड़ी तो व्यासजी किंचित गम्भीर हुए और बोले, 'दरअसल इसके पीछे बात ही कुछ और थी। पत्नीवाद तो बिल में से चूहे की तरह निकल आया। आजकल तो लोग पत्नी से अधिक प्रयेसी की बातें करते हैं पर हम तो अभी भी पत्नी पर ही जोर देंगे। हमारे बाद तो लोगों ने पत्नी की जैसे दुर्दशा ही करदी।'

वे कहने लगे, 'लेकिन जब स्वतंत्रता का संघर्ष चल रहा था तो हमने पत्नी को माध्यम बनाकर गोरी सरकार की मरम्मत करना प्रारम्भ कर दिया। उसी में से हमारा पत्नीवाद निकल आया।' जब मैंने उपन्यासकार जैनेन्द्रजी वाली प्रेयसी की बात छेड़ी गई तो वे मुस्कान भर बोले, 'उनकी प्रेयसी वाली बात तो कथन की है। यदि किसी प्रेयसी से हंसकर बोलें या कोई प्रेयसी हमारे ही नजदीक आ जाय तो हमारी पत्नीजी का तो जीना ही हराम हो जाय। परनारी का संभोग तो योग से भी कठिन है, यह कह उन्होंने एक कविता ही जड़ दी- 'कवि व्यास से इश्क की बात करो, बुरी बला है यह इश्कबाजी।'

(4) कवयित्री भी पैदा करता है कवि :

पत्नी और पत्नीवाद के प्रसंग से उतरते बात कविता और कवयित्री तक जा पहुंची। व्यासजी ने जब हमने कहा कि आजकल के कवि तो अपने साथ एक-न-एक कवयित्री अवश्य रखने लग गये हैं। कवि सम्मेलन में भी कवियों के साथ एकाध कवयित्री का बुलाना अच्छे कवि सम्मेलन का जरूरी हिस्सा बन गया है। इस प्रकार न जाने कितने कवियों ने कितनी कवयित्रियां पैदा कर दी हैं।

इसी बीच दाधीच ने मसखरी मारी, 'अब तो कवयित्री जैसे एक-एक रात में तैयार हो जाती है।' इस पर व्यासजी ने तुरप छोड़ी, 'नहीं, तीन-चार महीने तो लग ही जाते हैं।' यह सुन भगवती व्यास ने उक्ति दी, 'लोग कहते हैं कि सर्वाधिक कवयित्रियां कविवर नीरजजी ने तैयार की हैं।' इस पर देहला लगाते व्यासजी बोले, 'पर उनकी कवयित्रियां चालू नहीं हैं।'

(5) कविता में राग और रस जरूरी :

बात जब चलती है तो चलती ही रहती है, रूकने का नाम नहीं लेती पर बात कहने का रंगढंग ऐसा हो जिसके कारण श्रोता और प्रस्तोता दोनों की भावभूमि एकाकार हो।

कवि सम्मेलनों के प्रसंग में व्यासजी ने बताया कि यह उनका सौभाग्य रहा कि उन्होंने जगन्नाथप्रसाद रत्नाकर से लेकर भ्रष्ट से भ्रष्ट कवि के साथ अपनी रचना पढ़ी। कविता में यदि राग और रस हो तो वह कविता चाहे पुरानी हो या नई, तुकांत हो या अतुकांत श्रोता पसंद कर लेंगे पर अब कवि ऐसी कविताएं पढ़ने लग गये जिनमें न राग होती है, न रस ही। यदि कोई श्रुत मधुर नहीं है तो उसमें हल्कापन आ जाता है और श्रोता के साथ साधारणीकरण नहीं होता। कविता बोझिल करने के कारण ही जैसे भाषण की दुर्गत हुई वैसी ही कविता की दुर्गति हुई।

उन्होंने यह भी कहा, कविता एक सन्दर्भ में पढ़ने की चीज भी है। इसका उदाहरण कवि भावसारबा हैं। उनकी कविता 'मोतीलाल, माजना सूं मंदर में अइजइजे।' इस एक पंक्ति को ही उनसे सुनिये। वे दस बार इसी पंक्ति को सुना-सुना दस भावों की रंगवृष्टि कर श्रोताओं को खासी गुदगुदी देते मिलेंगे।

अभिजीत आईएएस में चयनित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आईएएस परीक्षा में सफलता हासिल करने वाले अभिजीत भाणावत ने कहा कि चाहे कुछ भी हो लेकिन कभी हार मत मानो। परिस्थितियां कभी आपके पक्ष में नहीं होतीं। उन्हें अपने अनुकूल बनाना होता है। बस इसी से मंजिल मिल जाएगी। अभिजीत मूलत: कानोड़ से हैं। उनके दादा प्रो. धनेश भाणावत, पिता शेखर भाणावत, मां रेखा और भाई सभी उच्च अध्ययन लिये हैं। इसी से प्रेरित होकर अभिजीत ने यह मुकाम हांसिल किया।

पालने में झुलता श्रवण

उदयपुर से 21 किलोमीटर दूर गोडानकला गांव में नवजात शिशु श्रवण को टोपले के पालने में झुलाती माता गंगाबाई गमेती। हे म रा ज-भमरीबाई के पुत्र भगवती का गत वर्ष ही विवाह हुआ। भगवती का भाई खेमराज पढ़ाई के साथ खेतीबाड़ी में सहयोग करता है। उसके बहन-बहनोई गोपीबाई-प्रकाश थूर की पाल के पास के गांव होनारिया में कृषि कार्य करते हैं।

उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि.
शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.)

स्वाधीनता दिवस के पर्व पर भण्डार के सभी सदस्यों एवं उपभोक्ताओं को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई

भण्डार के सुपर मार्केटों से नियमित स्कीमों का भरपूर लाभ उठावें

(प्रेम प्रकाश माण्डोत) प्रकाशक
(राजकुमार खांडिया) महाप्रबन्धक

GEETANJALI UNIVERSITY

(Established by Government of Rajasthan; U/S 2(f) of the UGC Act 1956)

Our Centers of Excellence

- GEETANJALI MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL
- GEETANJALI DENTAL & RESEARCH INSTITUTE
- GEETANJALI INSTITUTE OF PHARMACY
- GEETANJALI COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
- GEETANJALI COLLEGE OF NURSING
- GEETANJALI SCHOOL OF NURSING

WHY CHOOSE GEETANJALI UNIVERSITY?

- 14 Years of Geetanjali's Established Legacy
- Highly Qualified Faculty From Reputed Institutes Like AIIMS & PGIMER
- Accreditations & Excellent Placement Record
- Multiple Centres of Excellence Under One Roof

Programmes Offered

Geetanjali Medical College & Hospital

- DM (Neurology / Cardiology)
- MD (Pre-Para Clinical)
- MD/MS (Clinical)
- MBBS (MCI Recognized Degree)
- M.Sc. (Perfusion Technology)
- M.Sc. (Medical)
- M.Sc. (Clinical Psychology)
- MBA (Hospital Administration)
- B.Sc. (Medical Lab Technician)
- B.Sc. (Cardiac Perfusion)
- B.Sc. (Optometry)
- B.Sc. (Radio Therapy Technology)
- B.Sc. (Dialysis Technology)
- B.Sc. (Medical)
- Bachelor in Hospital Administration

Paramedical Diploma Courses
(approved By Raj. Paramedical Council)

- DMLT (Diploma in Medical laboratory Technology)
- Diploma in Radiation Technology
- Diploma in Ophthalmic Technology
- Diploma in Dialysis Technology
- Diploma in Operation Theater Technology

Geetanjali College & School of Nursing

- M.Sc. (Nursing)
- B.Sc. (Nursing)
- Post Basic B.Sc. (Nursing)
- GNM

Geetanjali Institute of Pharmacy

- D. Pharm.
- B. Pharm.
- M. Pharm.
- Pharm. D.
- Pharm. D. (Post Baccalaureate)

Geetanjali College of Physiotherapy

- Bachelor in Physiotherapy (B.PT.)
- Master in Physiotherapy (M.PT.)

Geetanjali Dental & Research Institute

- M.D.S.
- B.D.S.

Life At Geetanjali University

Academic

- Practical Exposure at its own in-campus 1210 bedded hospital
- Excellent classrooms and lecture theatres
- Modern library with 50,000+ books
- Laboratories with cutting-edge technology
- Wifi campus/Internet Labs

Infrastructure

- Over 50 acres of lush green campus
- 750-capacity acoustically designed auditorium
- Multi Cuisine food courts, cafeteria and central mess
- In campus mini supermarket
- In campus bank and ATM
- Gymnasium, playground, & sports facilities for healthy lifestyle

How to apply:

Application forms can be obtained from University campus or may be downloaded from University Website **www.geetanjaliuniversity.com (Except MBBS, DM / MD / MS, MDS, BDS & all Paramedical Diploma, where admission are done through entrance exam/ State Govt. Counselling).**

For course enquiry call between : 9:30 am to 6:00 pm +91 772 700 7842, +91 982 936 5388, 0294 2500014

For Admissions and enquiries,Visit our website: **www.geetanjaliuniversity.com**

Geetanjali Medicity, N.H. 8, Bypass, Near Eklingpura Chouraha, Udaipur | Rajasthan | India

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 अगस्त 2020

सम्पादकीय

ऑनलाइन एज्युकेशन

कोरोना के कारण जीवन के विविध क्षेत्रों में बड़ा ही विपरीत असर पड़ा है। अनेकों का जीवन दूभर हो गया है तो अनेकों के सामने जीविकोपार्जन तक के लाले पड़ने शुरू हो गये हैं। धंधे चौपट होने से जो अस्तव्यस्तता लड़खड़ाई है उसकी कल्पना करना भी हर एक के लिए संभव नहीं है। जिसके ऊपर बीती है वही जान रहा है।

किसी से समस्या कहते भी नहीं बन रही है और किसी के पास कोई हल भी नहीं है। ऐसे समय की किसी को उम्मीद नहीं थी। प्रकृति से भी कोई संकेत नहीं था इसीलिए ऐसे संकट को झेलने की किसी ने कोई तैयारी नहीं की। फिर मुसीबत आती है तो अकेली नहीं आती। अन्य मुसीबतें भी जैसे लवाजमे के साथ खड़ी हो आफत, परेशानी, विपत्ति और न जाने क्या-क्या त्रासदी दिखाकर जीना हराम कर देती हैं।

कोरोना के चलते शिक्षण व्यवस्था पर बड़ा असर पड़ा। जो शिक्षा श्रवण प्रधान थी वह धीरे-धीरे पठन प्रधान बन गई यानी कान से खिसककर आंख तक आ गई। श्रवण में रटन शिक्षा थी। कहावत भी थी- 'घोखत विद्या खोदत पानी।' कोरोना में आकर पढ़ाई का पूरा स्वरूप ही बदल गया। स्कूलों में बच्चों के साथ मोबाईल का प्रवेश वर्जित था। वही मोबाईल अब ऑनलाइन शिक्षा में प्रमुख एवं अनिवार्य आवश्यक हो गया है।

यह मोबाईल भी साधारण नहीं होकर स्मार्ट फोन अथवा टच स्क्रीन मोबाईल जरूरी है। इसके साथ नेट कनेक्शन आवश्यक है फिर इसे बच्चों को हेंडल करना आना जरूरी है। इसको चार्ज करने के लिए लाइट कनेक्शन जरूरी है। शहरों में तो यह संभव है पर गांवों में ये सारी सुविधाएं उपलब्ध ही नहीं हैं। वहां हर बच्चे के पास फोन भी नहीं है। अभिभावक भी बमुश्किल ही इन साधनों का उपयोग करते हैं। उनके लिए आवश्यक भी नहीं है। आर्थिक स्थिति भी सबके लिए ये साधन सुलभ करने की नहीं होती।

कक्षा में अध्यापक बच्चों को ठीक से समझ में आ जाये उस ढंग से बार-बार समझाने की कोशिश करता है। बच्चे भी समझ में नहीं आने पर पूछ लेते हैं। अपने साथियों से भी समझ लेते हैं पर ऑनलाइन में अध्यापक और छात्र वैसी भावभूमि में नहीं होते। ऐसी स्थिति में उनके पल्ले बहुत कम पड़ता है। अभिभावक स्वयं उस तरह के जानकार नहीं होते कि वे बच्चे को कुछ पढ़ा सकें। उनकी समस्या का निराकरण कर सकें।

छोटी कक्षाओं तथा नर्सरी के बच्चों की स्थिति तो बिल्कुल ही दयनीय है। उनकी तो ऑनलाइन पढ़ाई बहुत ही मुश्किल है। वे स्वभाव से चंचल प्रकृति के होने से चुपचाप बैठ भी नहीं सकते फिर घर में तो लाड़प्यार से ही अधिक पलते हैं। वे एकाग्र भी नहीं हो सकते। टीचर तो उनको मनोवैज्ञानिक ढंग से हेंडल करते हैं। उनके रंजन के लिए वहां साधन-सुविधा भी होती है। घर में उन्हें वह वातावरण भी सुलभ नहीं रहता।

सबसे बड़ी समस्या घर की चारदीवारी में कैद रहने की है सो इसका असर बच्चों पर बहुत बुरा पड़ रहा है। फिलहाल इसका हल किसी के पास नहीं है। आशा करते हैं ऐसे दिन अधिक नहीं देखने पड़ेंगे।

संभागीय आयुक्त द्वारा ध्वजारोहण

उदयपुर (विज्ञप्ति)। उदयपुर संभाग मुख्यालय पर संभागीय आयुक्त विकास एस. भाले ने

राष्ट्रीय ध्वज फहराया और पुलिस व होमगार्ड के दो-दो प्लाटुन वाली परेड का निरीक्षण किया। अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) ओ. पी. बुनकर ने महामहिम राज्यपाल के संदेश का पठन किया। समापन शिक्षिकाओं द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रगान से हुआ।

समारोह में नगर निगम महापौर गोविन्द्रसिंह टांक, पुलिस महानिरीक्षक श्रीमती बिनिता ठाकुर, जिला कलक्टर चेतन देवड़ा, जिला पुलिस अधीक्षक कैलाश विश्नोई, नगर निगम आयुक्त कमर चौधरी, जिला परिषद सीईओ डॉ. मंजू, गिर्वा एसडीएम डॉ. सौम्या झा, अतिरिक्त जिला कलक्टर संजयकुमार (शहर) सहित प्रमुख समाजसेवी, विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं पुलिस अधिकारी मौजूद थे। संचालन आकाशवाणी के उद्घेषक राजेन्द्र सेन व श्रीमती रागिनी पानेरी ने किया।

समारोह स्थल पर जिला प्रशासन की ओर से चिकित्सा, पुलिस, महिला एवं बाल विकास विभाग, आयुर्वेद, नगर निगम एवं अन्य संबंधित विभागों के कोरोना वॉरियर्स के रूप में सेवाएं देने वाले कार्मिकों को सम्मानस्वरूप बैठाया तथा मौजूद अतिथियों व विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों ने करतल ध्वनि के साथ आभार ज्ञापित किया।

संभागीय आयुक्त निवास एवं कार्यालय पर संभागीय आयुक्त विकास एस.भाले, जिला कलक्टर निवास एवं कार्यालय पर जिला कलक्टर चेतन देवड़ा तथा सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

हिन्दुस्तान ज़िंक के प्रधान कार्यालय प्रांगण में मुख्य कार्यकारी

अधिकारी अरूण मिश्रा ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर ज़िंक डिस्पेंसरी के डॉक्टर्स एवं टीम, ज़िंक एवं सोडोक्सो के कर्मचारियों एवं टीम को अरूण मिश्रा ने सम्मानित किया।

नारायण सेवा संस्थान के मानव मंदिर परिसर में संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव ने ध्वजारोहण किया। इस दौरान सहसंस्थापिका कमलादेवी, प्रशांत अग्रवाल, वंदना अग्रवाल, पलक अग्रवाल तथा देवेंद्र चौबीसा उपस्थित थे। सेवा महातीर्थ, बड़ी में अनिल आचार्य ने ध्वज फहराया। संचालन महिम जैन ने किया।

गीतांजली में आंत में संकरेपन का सफल उपचार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, में चिकित्सकों ने बड़ी आंत में संकरेपन का सफल उपचार किया है।

पीडीयाट्रिक सर्जन डॉक्टर अतुल मिश्रा ने बताया कि गत दिनों मंदसौर निवासी एक वर्षीय बच्चे को खाना ना खा पाने व पेट फूलने की परेशानी के चलते हॉस्पिटल में भर्ती किया गया। बच्चे की जांचे करने पर पता चला कि उसके बड़ी आंत में संकरापन है।

इस पर डॉ. अतुल मिश्रा के अलावा एच.ओ.डी. डॉ. देवेन्द्र सरीन, नवजात शिशु स्पेशलिस्ट डॉ. धीरज दिवाकर, कामना व ओ.टी. स्टाफ, एन.आई.सी.यू. इंचार्ज अनिल व टीम ने सफलतापूर्वक इलाज कर बच्चे को स्वस्थ जीवन प्रदान किया।

उदयपुर में कृष्ण जन्माष्टमी को ओसवाल महिला मंच द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में यशोदा बनी संतोष मेहता अपने एक वर्षीय पौत्र कान्हा के साथ प्रथम चयनित एवं पुरस्कृत।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY

(Established by the Rajasthan State Legislative Assembly and as per Sec. 2(F) of UGC Act 1956.)

ADMISSION OPEN 2020-21

Constituent Colleges:

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
VENKATESHWAR COLLEGE OF SCIENCE
VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING
VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING
VENKATESHWAR COLLEGE OF COMMERCE AND MANAGEMENT

SALIENT FEATURES

- Highly Qualified & Professional Faculty
- Practical Exposure at its own with 800 Bedded Multisuper Speciallity Hospital
- Modern & Highly Equipped Labs & Classrooms
- Wi-Fi Campus & Digital Library

Courses Offered

Faculty of Medical Sciences

M.Sc. (Medical Sciences)
Anatomy, Biochemistry, Microbiology, Pharmacology, Physiology
Duration : 3 years
Eligibility: B.P.T., B.Sc.(Medical), BHMS,BAMS, BDS, MBBS, B.Sc.(Biotech), B.Pharma

BPT
Duration : 4 Years + 6 Months Intern.
Eligibility : 10+2 Science(Biology)

Faculty of Pharmacy

B. Pharm. Approved by PCI
Duration : 4 years
Eligibility: Eligibility :10+2 Science(Biology/Maths) with English

D. Pharm. Approved by PCI
Duration : 2 years
Eligibility : 10+2 Science(Biology/Maths) with English

Faculty of Paramedical Sciences

B. Sc. (Paramedical Sciences)
Radiology/MIT, Neuroscience, Dialysis, Radiotherapy, Renal Dialysis, Anaesthesia, Respiratory Care, Optometry, Imaging Technology, MLT, Operation-Theatre Technology
Duration : 3 years
Eligibility: 10+2 Science(Biology) with English

Faculty of Science

B. Sc. (Biology/Maths)
Duration : 3 years
Eligibility: 10+2 Science (Biology/Maths)

Ph.D. (Medical & Allied Sciences)

Anatomy, Biochemistry, Microbiology, Pharmacology, Physiology, Nursing
Duration : Minimum 3 years
Eligibility : Master Degree in relevant subject.

Faculty of Commerceand Management

B.Com., BBA (GBA)
Duration : 3 years
Eligibility : 10+2 (Commerce) for B.Com
Eligibility : 10+2 Any Stream for BBA

Faculty of Nursing

B. Sc. (Nursing) Approved by INC
Duration : 4 years
Eligibility : 10+2 (Science Biology) with English

M. Sc. (Nursing) Approved by INC
Medical Surgical Nursing, Community Health Nursing, Obstetrics & Gynecological Nursing, Pediatric Nursing/ Child Health Nursing, Psychiatric Nursing/ Mental Healthnursing
Duration : 2 years
Eligibility : B.Sc. (Nursing)

GNM Approved by INC
Duration : 3 years
Eligibility : 10+2 From any Stream

"AN INVESTMENT IN KNOWLEDGE ALWAYS PAYS THE BEST INTEREST."

Ambua Road, Umarda, Udaipur (Raj.) 313015
Contact :9116132834, 9587890082, 8005787638, 9587890081
admission@saitirupatiuniversity.ac.in | Website : www.saitirupatiuniversity.ac.in

हरितराजसिंह मेवाड़ का स्वागत

उदयपुर (विज्ञप्ति)। रक्षाबंधन पर्व पर मेवाड़ अधिपति श्री एकलिंगनाथजी के शुभाषीश से अरविन्दसिंह मेवाड़ के सुपौत्र तथा लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ के सुपुत्र हरितराजसिंह मेवाड़ का मेवाड़ में आगमन हुआ। शुभ मुहूर्त में पण्डितों ने मंत्रोच्चार द्वारा परम्परागत विधि विधानपूर्वक पूजन करा गृह प्रवेश करवाया। दही और गुड़ से मुंह मीठा करवाया गया तथा शगुन के गुड़-धनिया व पताशे बांटे गए। इस मौके पर मेवाड़ परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे।

जयश्री को पीएच.डी.

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने जयश्री चूंडावत को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की है। जयश्री ने मेवाड़ की लोक संस्कृति में काष्ठकला का अनुशीलन विषय पर डॉ. कहानी भानावत के निर्देशन में शोध किया है।

वाई वाई नूडल्स की बिक्री में वृद्धि

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मल्टीनेशनल समूह सीजी कॉर्प ग्लोबल के एफएमसीजी वर्टिकल, सीजी फूड्स के रूपनगढ़ संयंत्र को राजस्थान के उपभोक्ताओं की मांग को पूरा करने के लिए 90 प्रतिशत उत्पादन क्षमता के साथ संचालन किया जा रहा है। सीजी फूड्स अपने उत्पाद वाई वाई-रेडी टू ईट वेरीयंट्स और कन्वेन्शनल नूडल्स को वाई वाई एक्सप्रेस के तहत सप्लाई करती है।

जिलेट का नया गार्ड 3 लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पुरुष उपभोक्ताओं को अपने घर पर ही अपनी सुविधा के अनुरूप शेविंग प्रदान करने लिए डिज़ाईन किया गया पहला जिलेट गार्ड लॉन्च करने के बाद जिलेट ने एक और क्रांतिकारी उत्पाद लॉन्च किया।

कार्तिक श्रीवात्सन, एसोशिएट डायरेक्टर एवं कंट्री कैटेगरी लीडर, शेव केयर, भारतीय उपमहाद्वीप, पीएंडजी ने कहा कि पुरुषों को नजदीकी और सबसे किफायती शेव प्रदान करने वाला, गार्ड 3 साठ रुपये के मूल्य में 3 ब्लेड्स के साथ शेव का ज्यादा बेहतर एवं सुरक्षित अनुभव देता है। रेज़र डिज़ाईन करने के इस नए तरीके से जिलेट ने गार्ड यूज़र्स की विकसित होती जरूरतों को समझकर इनोवेशन की प्रक्रिया में परिवर्तन किया है और नया गार्ड 3 बनाकर उनकी समस्याओं का समाधान किया है। ग्राहकों की बदलती जरूरतें व ट्रेंड्स प्रदर्शित करते हैं कि पुरुष शेविंग को सुगम व तीव्र बनाना चाहते हैं। युवा तो तत्काल परफेक्शन पाना चाहते हैं। इस भावना के साथ गार्ड 3 में तीन ब्लेड दिए गए हैं, जो तीव्र व सुगम शेव प्रदान करते हैं।

बेनेली की एक्सक्लुसिव डीलरशिप

उदयपुर (विज्ञप्ति)। प्रीमियम बाईक्स के अग्रणी विश्वस्तरीय निर्माता बेनेली और अदीश्वर ऑटो राईड इण्डिया-

महावीर ग्रुप ने उदयपुर के शोभागपुरा में अपने 29वें एक्सक्लुसिव शोरूम को लॉन्च किया। शोरूम में 'प्रिज़्म मार्केटिंग प्रा. लि.' की डीलरशिप के तहत नई लॉन्च की गई बीएस6 इम्पीरियल 400 को पेश किया जाएगा। इम्पीरियल 400 का लॉन्च हाल ही में भारत में रु 1.99 लाख (एक्स-शोरूम) की कीमत पर किया गया था। उपभोक्ता न्यूनतम 6000 रूपये की राशि के साथ इम्पीरियल 400 की बुकिंग शोरूम तथा ऑनलाईन भी कर सकते हैं। यह तीन रंगों- रैड, ब्लैक और सिल्वर में उपलब्ध है। इम्पीरियल 400 तीन साल की अनलिमिटेड किलोमीटर वारंटी तथा 2 साल की कॉम्प्लीमेंटरी स्टैण्डर्ड सर्विस के साथ आती है। इसके अनुभव को और अधिक बेहतर बनाने के लिए बेनेली इण्डिया ने अपने सभी इम्पीरियल 400 उपभोक्ताओं के लिए तीन साल का एएमसी पैकेज, पिक एण्ड ड्रॉप सर्विस और 24/7 रोड साईड असिस्टेन्स की सुविधा भी पेश की है।

'शौर्य केजीसी कार्ड' लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक ने सैन्य बलों के लिए अपनी तरह के पहले उत्पाद, 'शौर्य केजीसी कार्ड' लॉन्च किया है। यह नई विशेषताओं व 45 लाख से ज्यादा सैनिकों के लिए विशेष रूप से बनाए गए पात्रता के मापदंडों के साथ आएगाजो भारत सरकार द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड के दिशानिर्देशों पर आधारित है। कार्ड के लिए 2 लाख रूपये के लाईफ कवर की बजाय 10 लाख रूपये का लाईफ कवर कर दिया गया है।

यह कार्ड डिजिटल माध्यम से आदित्य पुरी, मैनेजिंग डायरेक्टर, एचडीएफसी बैंक एवं राजिंदर बब्बर, बिजनेस हेड, रूरल बैंकिंग ग्रुप, एचडीएफसी बैंक द्वारा लॉन्च किया गया। श्री पुरी ने कहा कि सैन्य बल एवं उनके परिवारों के लिए यह उत्पाद लॉन्च करना गौरव की बात है। थल सेना, जल सेना एवं वायु सेना तथा अर्द्धसैनिक बल जैसे बीएसएफ, आईटीबीपी, सीआरपीएफ, कोस्टल गार्ड, सीआईएसएफ एवं असम/जम्मू-कश्मीर राईफल्स को यह कार्ड दिया जाएगा। यह गतिविधि बैंक के 'हर गांव हमारा' अभियान का हिस्सा है।

नेटफ्लिक्स हिंदी में भी उपलब्ध

उदयपुर (विज्ञप्ति)। दुनिया की अग्रणी स्ट्रीमिंग एंटरटेनमेंट सेवा, नेटफ्लिक्स ने हिंदी में अपना यूज़र इंटरफेस लॉन्च किया। इसके बाद अपनी पसंदीदा भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय फिल्म्स व सीरीज़ देखने के इच्छुक दर्शक हिंदी में उन्हें डिस्कवर कर सकेंगे। साईन इन से लेकर सर्च रो, कलेक्शन एवं पेमेंट तक नेटफ्लिक्स का संपूर्ण अनुभव मोबाईल, टीवी एवं वेब सहित सभी डिवाईसेस पर हिंदी में उपलब्ध होगा।

नेटफ्लिक्स इंडिया की वीपी-कंटेंट, मोनिका शेरगिल ने कहा कि नेटफ्लिक्स के यूज़र्स अपने डेस्कटॉप, टीवी या मोबाईल ब्राउज़र में जाकर 'मैनेज प्रोफाईल्स' चुनकर लैंग्वेज़ विकल्प से हिंदी यूज़र इंटरफेस में जा सकेंगे। नेटफ्लिक्स पर सदस्य हर अकाउंट में अधिकतम पाँच प्रोफाईल सेट कर सकते हैं और हर प्रोफाईल की अपनी अलग लैंग्वेज़ सेटिंग होगी। भारत के बाहर रहने वाले नेटफ्लिक्स सदस्यों को भी अपना यूज़र इंटरफेस हिंदी में बदलने का विकल्प मिलेगा। यह नया यूज़र इंटरफेस नेटफ्लिक्स को और ज्यादा एक्सेसिबल बना देगा एवं उन सदस्यों के लिए सुगम होगा, जो हिंदी को प्राथमिकता देते हैं।

मेवाड़ की संत परंपरा पर पीएचडी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के शोधार्थी श्री प्रफुल्ल ताकड़िया को उनके शोध 'मेवाड़ की संत परम्परा का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (19वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य)' विषयक

शोधकार्य करने पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की है। उन्होंने अपना शोधकार्य डॉ. जे.के ओझा के निर्देशन में पूर्ण किया। प्रफुल्ल ताकड़िया ने अपने शोध के दौरान पाया कि विश्व के सभी संतों ने करूणा, दया, सहिष्णुता का धार्मिक समन्वय करते मानव मूल्यों की स्थापना की।

सुनील दुग्गल वेदांता के सीईओ बने

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वेदांता लि. ने हिंदुस्तान जिंक के पूर्व सीईओ सुनील दुग्गल को कंपनी का नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनाया है। वेदांता लि. के चैयरमेन अनिल अग्रवाल ने कहा कि सुनील ने अपने अनुभव, परिपक्वता और प्रमुख नेतृत्व को सदैव साबित किया है। सुनील ने ऐसे समय में पदभार संभाला है

जब वेदांता देश को आत्मनिर्भर भारत बनाने के आह्वान की प्रतिबद्धता को अगले चरण में ले जाने की ओर बढ़ रहा है। सुनील दुग्गल ने कहा कि मेरा दृढ़ संकल्प है कि भारत आत्मनिर्भर बने और इस उच्च लक्ष्य को संभव बनाने के लिए मैं सदैव कंपनी और समुदाय को समृद्ध करने के लिए प्रतिबद्ध और कटिबद्ध हूं।

फिक्की और ओयो ने हाथ मिलाया

उदयपुर (विज्ञप्ति)। फिक्की और ओयो ने हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री के लिए एक ख़ास ऑनलाइन ट्रेनिंग और सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया है। इस पाठ्यक्रम को भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा घोषित मानकों के आधार पर बनाया गया है, जिसका उद्देश्य सैनेटाइजेशन प्रोटोकॉल को नए प्रारूप से बनाने के साथ-साथ कम से कम व्यक्तिगत संपर्क रखना है।

सर्टिफिकेशन कोर्स भारत में हजारों बजट, मिड सेगमेंट, बुटीक होटलों और होमस्टेस के अतिरिक्त हॉस्पिटैलिटी प्रोफेशनल के लिए भी मददगार होगा ताकि वे सरकार और इंडस्ट्री के बेंचमार्क और सर्वोत्तम तरीकों के अनुरूप अपनी सुरक्षा और स्वच्छता मानकों को बनाए रखने के साथ बेहतर बना सकें।

यह पाठ्यक्रम हिंदी और अंग्रेजी दोनों में उपलब्ध है। प्रमाणन पाठ्यक्रम में होटल और हॉस्पिटैलिटी प्रोफेशनल्स को प्रमुख सुरक्षा दिशानिर्देशों को लागू करने में मदद करने के लिए निर्मित नौ प्रशिक्षण मॉड्यूल का एक सेट तैयार किया गया है। इन मॉड्यूल में होटल, कर्मचारी, अतिथि, फ्रंट-ऑफिस, एफ एंड बी सेवा, हाउसकीपिंग, गेस्ट रूम की सफाई और खाद्य उत्पादन की सलाह शामिल हैं।

अमेजनडॉटइन पर सबसे बड़ी सेल

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अमेजनडॉटइन पर सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों (एसएमबी) और प्राइम मेंबर्स ने प्राइम डे पर अभी तक का सबसे ज्यादा फायदा उठाया। एसएमबी विक्रेताओं, नए मेंबर साइन-अप्स और प्राइम बेनेफिट्स का लाभ लेने के लिए यह सबसे बड़े 48 घंटे थे। अमेजन इंडिया के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट और अमित अग्रवाल ने कहा कि अभी तक के सबसे अधिक एसएमबी भागीदारी के साथ, 5900 से अधिक पिन कोड के 91000 से अधिक एसएमबी, कालाकारों, बुनकरों और महिला उद्यमियों ने प्राइम डे 2020 के दौरान सफलता हासिल की। इनमें से, 62000 से अधिक विक्रेता गैर-मेट्रो और टियर 2 व 3 शहरों से थे।

मेकैनिकों के लिए पहली सुरक्षा पहल लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पूरी दुनिया में प्रीमियम ब्राण्डेड लुब्रिकेन्ट्स और ऑटोमोटिव सर्विसेज का अग्रणी आपूर्तिकर्ता वैल्वोनलाइन क्यू मिन्स प्रा. लि. ने पहली सुरक्षा पहल लॉन्च की है, जिसके अंतर्गत पूरे देश के मेकैनिकों तक पहुँच 'सुरक्षा किट' प्रदान कर जरूरी सुरक्षा दिशा-निर्देशों पर उन्हें जागरूक कर रहे हैं। सुरक्षा पहल के अंतर्गत वैल्वोलाइन ने दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, चेन्नई, हैदराबाद, इंदौर जैसे 100 बाजारों में 70,000 से ज्यादा सुरक्षा किट्स वितरित किये और अब उदयपुर के मेकैनिकों तक पहुंच बनाई। इस सुरक्षा किट में 4 मास्क, 100 एमएल का सैनिटाइजर और एक कैप शामिल है। मैनेजिंग डायरेक्टर संदीप कालिया ने कहा कि वैल्वोलाइन उच्चतम विश्वास से जुडा हुआ है, इसलिये हमारे सभी कर्मचारियों, उपभोक्ताओं, बिजनेस पार्टनर्स और जिस समुदाय में हम सभी रहते हैं, उसकी सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

राममय अयोध्या.....

(पृष्ठ एक का शेष)

यही नहीं उन्होंने गुरु वशिष्ठ से ज्ञान, केवट से प्रेम, शबरी से मातृत्व, हनुमान तथा वनवासी बंधुओं से सहयोग तथा जनता जनार्दन से विश्वास अर्जित कर अपने अद्‌भुत व्यक्तित्व का निर्माण करते वीरता, उदारता, सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, धैर्य, दृढ़ता जैसे गुणों से ओतप्रोत हो जिस आत्मीक दृष्टि का राम ने भंडारण किया उसका लोहा पूरे विश्व ने माना। यही कारण है कि पूरे विश्व में राम को लेकर विभिन्न स्मारक, मंदिर, पूजास्थल, स्वस्थ जनरंजन के प्रतीक लीला प्रदर्शन जैसे अनेक सोपान आज भी जीवंत हुए भक्ति, धर्म, अध्यात्म तथा जीवनोत्कर्ष के सबब बने हुए हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भगवान श्रीराम का यह मंदिर आने वाली पीढ़ियों के लिए आस्था, संकल्प और श्रद्धा की प्रेरणा बनेगा। इससे उसकी भव्यता को चार चांद लगेंगे और पूरा अर्थतंत्र ही बदल जायेगा। जब पूरे विश्व के लोग यहां आयेंगे तो पूरी दुनियां में प्रभु राम और माता जानकी के संदेश के साथ-साथ, राम मंदिर का संदेश तथा हमारी हजारों वर्षों की परम्परा का संदेश गूंजेगा।

कुल 32 सैकंड के अभिजीत मुहूर्त में यजुर्वेद के प्रतिष्ठा मंत्र के साथ नींव में नौ पूजित शिलाओं के साथ स्वर्ण कलश रखा गया। पूजन विधि आचार्य दुर्गाप्रसाद गौतम ने अपने अन्य साथियों के साथ सम्पन्न कराई। उन्होंने कहा कि भूमि पूजन बाद भी मंदिर निर्माण तक धरा-शांति यज्ञ चलता रहेगा।

सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि राम मंदिर पूर्ण होने से पूर्व हमारा मन मंदिर बनकर तैयार रहना चाहिये ताकि हम संपूर्ण विश्व के लिए सुख-शांति प्रदान करने वाला भारत खड़ा कर सकें। उन्होंने इस अवसर को आनंद का क्षण बताते कहा कि जो हमने संकल्प लिया था वह 30वें साल के प्रारंभ में आज पूर्ण होने का आनंद मिल रहा है। यह भी कि सदियों की आस पूरी होने का आनंद मिल रहा है। आनंद देश के आत्मनिर्भर होने और जिस आत्मविश्वास की हमें आवश्यकता थी उसके सगुण साकार अधिष्ठान बनने के शुभारंभ का, परम वैभव सम्पन्न तथा सबका कल्याण करने वाले भारत के नवनिर्माण के शुभारंभ होने का मिल रहा है और यह भी आनंद का अवसर है जब ऐसे निर्माण का व्यवस्थागत नेतृत्व जिनके हाथ में है उनके हाथों से होने के हम सब साक्षी हैं।

उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि श्रीराम जन्मभूमि में राम निर्माण मंदिर की इस घड़ी की प्रतीक्षा करते-करते हमारी कई पीढ़ियां चली गईं। अनेकों ने अपना बलिदान दिया किंतु हमारी साध-साधना चलती रही। उन्होंने विश्वास दिलाते कहा कि अयोध्या को वैभवशाली नगरी बनाने के लिए हम सब कटिबद्ध और प्रतिबद्ध हैं। संध्या को संपूर्ण अयोध्या का चप्पा-चप्पा माटी के दीयों से जगमग झिलमिल उठा। रोशनी की जगमगाहट ने पूरी धरती को ही नहीं, पूरे आकाश मंडल को भी सौंदर्य के साथ 'आज रो दन आनंद अयोध्या में राम पधारया' के उमंग उल्लास में आरती उतारते वैभव विह्वल कर दिया। इस कार्यक्रम में 36 संप्रदायों के 140 संतों को बुलाया गया।

प्रधानमंत्री मोदी के उद्‌बोधन पर विश्व राजनीति के विशेषज्ञ अध्येता वेदप्रताप वैदिक का यह कथन उल्लेखनीय है- 'अयोध्या में राम मंदिर के भव्य भूमिपूजन का कार्यक्रम अद्‌भुत रहा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भाषण में जैसा पांडित्य प्रकट हुआ है, वह विलक्षण ही है। किसी नेता के मुंह से पिछले 60-70 साल में मैंने राम और रामायण पर इतना सारगर्भित भाषण नहीं सुना। मोदी ने भारतीय भाषाओं में राम के बारे में लिखे गए कई ग्रंथों के नाम गिनाये। इंडोनेशिया, कम्बोडिया, थाईलैंड, मलेशिया आदि कई देशों में प्रचलित रामकथाओं का जिक्र किया। राम के विश्वव्यापी रूप का इतना सुंदर चरित्र-चित्रण तो कोई प्रतिभाशाली विद्वान और प्रखर वक्ता ही कर सकता है। सबसे ध्यान देने लायक तो यह बात रही कि उन्होंने एक शब्द भी ऐसा नहीं बोला जिससे सांप्रदायिक सद्‌भाव को ठेस लगे। यह खूबी सरसंघ चालक मोहन भागवत के भाषण में काफी अच्छे ढंग से उभरकर सामने आई। उन्होंने राम को भारत का ही नहीं, सारे विश्व का आदर्श कहकर वर्णित किया। राम मंदिर का ताला खुलवाने वाले राजीव गांधी की पत्नी सोनिया गांधी मंच पर होतीं तो इस कार्यक्रम में चार चांद लग जाते। दुनियां को पता चलता कि राम सिर्फ भाजपा, सिर्फ हिन्दुओं और सिर्फ भारतीयों के ही नहीं हैं बल्कि सबके हैं।'

सच ही है, राम सर्वत्र पूजित हैं। सभी जातियों में राम की महिमा है। मेवाड़ में तो कहावत ही है 'कै तो राखै राम नै कै राखै डाम।' अर्थात् या तो राम ही सबका जीवनदाता है या फिर बीमारी पर शरीर के किसी अंग विशेष पर रोगानुसार लगाये जाने वाला डाम यानी दग्ध चिन्ह। कृषक समुदाय की खेती तो राम के ही आसरे रहती है। राम ही खेती का रखवाला है। इसीलिए कथन है- 'रामई की चिड़िया, रामई को खेत, खावो री चिड़िया भर-भर पेट।'

रामचरित मानसकार गोस्वामी तुलसीदास ने अनेक स्थानों का भ्रमण किया। वे मेवाड़ में उदयपुर भी आये। उदयपुर के प्रवेश द्वार देबारी में जहां उन्होंने विश्राम किया वह स्थल तुलसी बैठक के नाम से चर्चित है। प्रसिद्धि है कि उन्होंने महाराणा प्रताप को अपना लिखा भरतचरित सुनाथा था। तुलसी तो पूरे ही राममय थे। उन्होंने लिखा भी-

राम सौं बड़ो है कौन मोसौं कौन छोटो।
रामसौं खरो है कौन मोसौं कौन खोटो।।

इस बीच यह एक और अच्छी खबर है कि इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउण्डेशन अयोध्या में 1400 गज में मस्जिद का और शेष जगह अस्पताल का निर्माण करायेगा। मस्जिद के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा धुन्नीपुर में पांच एकड़ जमीन दी गई थी।

इधर श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपालदास ने ट्रस्ट को करीब एक क्विंटल सोना-चांदी और एक लाख का चैक सौंपा है। खबर तो यह भी है कि विहिप और बीजेपी 10 करोड़ परिवारों से मंदिर निर्माण के लिए पांच हजार करोड़ के चंदे सहित देशभर के 2.75 लाख गांवों में भगवान राम की प्रतिमा स्थापित करने का लक्ष्य लिए है।

समारोह के पश्चात तत्काल प्रेषित प्रतिक्रिया

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण के शिलान्यास समारोह पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उद्‌बोधन अद्वितीय तथा अलौकिक था। मोदीजी की स्मरण शक्ति, विषय की गहराई, भाषा की निरन्तरता, अवसर की सुसंगता और पद की गरिमा के अनुरूप शब्द विन्यास सभी कुछ अनुपम था।

मोदीजी के व्याख्यान में कथावाचक की कथा के समान रोचकता, सरसता और एकलयता थी। उनके विचार समसामयिक और प्रेरणास्पद थे साथ ही जनमानस की भावनाओं को आन्दोलित करने वाले थे। उनके भाषण में एक सीमा तक देश के भविष्य की दिशा को परिभाषित करने का सन्देश भी था।

-हिमांशु नागोरी, उदयपुर

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

स्वाधीनता दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

कैसे-कैसे अजूबे मानवेतर विवाह (1)

शब्द रंजन के पिछले 7 अंकों में मेवाड़ में प्रचलित विवाह के रीतिरिवाजों पर विस्तृत जानकारी दी गई थी। यहां विवाह से जुड़े विभिन्न नाम-रूपों पर बड़ी ही रोचक जानकारी मिलती है। इनमें से कुछ रूप तो अब भी गांवों में प्रचलित हैं। अक्षय तृतीया (आखा तीज) पर अबूझ मांडे की परंपरा रही है। बिना मुहूर्त के इस दिन बालविवाहों की धूम मच जाती थी। अब यह प्रथा कानूनन निषिद्ध है।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि राजस्थान में विवाह को ब्याव तथा मांडा कहते हैं। विवाह प्रारम्भ होने को मांडा मांडना, बरात को जान, बराती को जानिया, बरात में जाने वाली स्त्रियों को जानणियां, वर को बींद, वधू को बींदणी, बरात के ठहरने के स्थान को डेरा अथवा जान्यावास ; विवाह सम्बन्ध को सगाई, सगपण ; ब्याह में आई औरतों को नूतारणियां ; लड़की के विवाह में आये पुरुषों को मांड्या, सगपण हुई लड़की को मांग तथा लड़के को मंगेतड़ कहते हैं। वधू पक्ष वाले जब अपने यहां बरात नहीं बुलवाकर स्वयं वर के गांव विवाह कराने चले जाते हैं तो वह बैठा मांडा कहलाता है। विवाह में यदि वर पक्ष वाले वर के रूपये लेते हैं तो वह देज तथा वधू पक्ष वाले वर पक्ष से वधू के लिए जो रूपये लेते हैं वह दापा कहलाता है। प्रथम शादी के बाद जब कोई दूसरी शादी करने जाता है तो उस समय उसकी संतानें उसकी घोड़ी की मोरड़ी नहीं देखती हैं। घोड़ी चढ़ते समय उसकी लगाम वर की माता, बहिन अथवा भोजाई से पकड़ाई जाने का दस्तूर किया जाता है और वर के मोड़ पर कापड़ा वार कर सेवग को दिया जाता है। विवाह के यहां कई रूप प्रचलित हैं। इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार है-

पेट ब्याह- गर्भावस्था में ही जब आपस में एक-दूसरे से सगपण कर लिया जाता है तो वह पेट ब्याह कहलाता है। इसमें दोनों पक्षों के गर्भस्थ शिशु में से यदि एक के लड़का तथा दूसरे के लड़की जन्म लेती है तो यह विवाह पहले से ही तय करार दिया जाता है।

आटे-हाटे ब्याह- इसमें दोनों पक्षों के लड़के लड़की का एक दूसरे के लड़के लड़की के साथ विवाह कराया जाता है।

धर्मादा ब्याह- इसमें किसी किस्म का लेज देज नहीं लिया जाता है।

तीजै टकड्ये ब्याह- इसमें तीन पक्ष होते हैं। तीनों की लड़कियां एक-दूसरे के लड़कों को ब्याही जाती है।

तुलसी ब्याह- जब पति पत्नी दोनों मर जाते हैं तो दोनों पक्ष वाले अपने सम्बन्धों को स्थायी रखने के लिए तुलसी विवाह की रचना करते हैं। इनमें लड़के का पिता शालिग्राम (ठाकुरजी) की बरात ले जाता है, जिसके साथ लड़की का पिता तुलसी (पौधा) का ब्याह रचाता है।

खेजड़ली ब्याह- तीसरी शादी करना अपशकुन माना जाता है। अत: तीसरा विवाह करने वाले से इस अपशकुन से बचने के लिए शुभ शकुन स्वरूप शादी करने जाने से पूर्व खेजड़ली के चारों ओर चक्कर लगवा दिया जाता है। मार्ग में यदि खेजड़ी नहीं मिलती है तो बोरड़ी के चक्कर लगवा दिया जाता है। कभी-कभी रस्म अदायगी के रूप में जेब में इनकी डाली रख दी जाती है। इनके अभाव में कपड़े की बनी ढूली (गुड़िया) जेब में रख ली जाती है। इससे यह समझ लिया जाता है कि शादी से पूर्व तीसरी शादी गुड़िया से करा दी गई है।

(1) ढूला-ढूली का ब्याह

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि छोटे-छोटे बालकों में ढूला-ढूली का ब्याह प्रचलित है जो उनके अन्य खेलों के साथ बड़ी रूचि के साथ खेला जाता है। सन् 1974 का स्मरण करते उन्होंने अपने ही परिवार की एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि एक दिन अचानक मेरी बिटिया कविता को अपनी ढूली की याद हो आई। बिस्तर से उठते ही वह सीधी अपनी उस छोटी सी पेटी की तरफ लपकी जिसमें उसने गुड़िया छिपा रखी थी। हम लोग चाय पी रहे थे। उसने ढूला-ढूली बताते उनके लिए चाय और चम्मच मांगा।

चाय और चम्मच देते हुए उसकी अम्मा की दृष्टि जब उस गुड़िया पर गई तो उसे नंगी पाकर वह झल्ला उठी और कहने लगी कि तत्काल इसे कपड़े पहनाओ। बरसात में गुड़िया कभी नंगी नहीं रहती। पांच-सात बरसों से पानी के लाले पड़ रहे हैं। नंगी गुड़ियाएं डाकनियां बन जाती हैं और पानी रोक देती हैं। कविता ने चाय का आधा कप छोड़ा और पहले गुड़िया को साड़ी-घाघरा पहनाया।

मैं सोचता रह गया। मुझे याद हो आया बरसात का मौसम देवी-देवताओं के सोने का है। कोई देवताओं को छूता नहीं। पाबूजी की पड़ें बनाकर अपनी आजीविका कमाने वाले जोशी चितेरे भी इस ऋतु में पड़ांकन नहीं करते। पड़ें बांचने वाले भोपे भी इन दिनों अपना यह कर्म नहीं करते। पच्चीसों प्रकार के देवी-देवता बनाने वाले मोलेला के कुम्हार भी इन दिनों मिट्टी को नहीं गूंदते और न कहीं देव-देवरों में चौमासे में कहीं प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की जाती है। यही क्यों, घर के पूरवजों से सम्बन्धित जरूरी से जरूरी काम तक इस मौसम में रोक दिये जाते हैं। न रातिजगा दिया जाता है न नये पूरवज को छाबने ही बिठाया जाता है।

इन देवी-देवताओं की तरह ये ढूलीफूंत्ये भी साधारण मानव नहीं होकर देवता तुल्य ही हैं। इसीलिए इस मौसम में इनके सोने का विधान है। ये केवल चार महीने सोते हैं परन्तु नन्हे-नन्हे बच्चों के ये नन्हे-नन्हे देवता इतनी लम्बी अवधि तक नहीं सो सकते हैं। कभी पलक मूंदते हैं तो कभी अधर फरकाते रहते हैं। इसलिए इनके साथ यह छूट रख दी गई कि इन्हें सुलाया नहीं जाये तो कम से कम नंगा तो नहीं रखा जाय ताकि बरसात की कोई भी बूंद इनके शरीर को नहीं छू पाये। यदि छू गई तो फिर ये अनिष्ट किये बिना नहीं रहेंगे।

इसीलिए इन्हें कपड़ों से ढककर रखने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। बच्चों के ये देव बच्चों की राजीखुशी और मानमर्यादा पर चलते हैं। बच्चे इनका अच्छी तरह लालन-पालन करते हैं। अच्छा ओढ़ाते-पहिनाते हैं। उन्हें नंगा नहीं घसीटते हैं। इनके प्रति वे आनन्द का भाव रखते हैं लेकिन बरसात में तो उन्हें अनिवार्यत: अपनी मर्यादा में रहना पड़ता है। इसलिए प्राय: इस मौसम में ढूला-ढूली के खेल बच्चों द्वारा नहीं खेले जाते हैं।

बच्चों के ये देव साधारण देव हैं। गणगौर ईसर आदि विशिष्ट देवों के साथ तो किसी प्रकार की कोई छूट नहीं रहती। पिछली गणगौर पर ही मैंने देखा, छोटे-छोटे बच्चों के नन्हे-नन्हे गणगौर ईसर मुहूर्त के अनुसार पूरे वर्ष भर के लिए जब तक अगला गणगौर त्यौहार नहीं आये, कपड़ों से उन्हें ढककर किसी बोरी तापड़े में सुला दिये जाते हैं। सुलाते समय इनके शरीर के सारे कपड़ेलत्ते तथा गहनेगांठे खोल लिये जाते हैं। बहुत से लोग गणगौरों के साथ-साथ बच्चों की इन छोटी गणगौरों को भी पानी में ठंडे कर देते हैं।

गणगौर के बाद आने वाली नजला ग्यारस भी इसी प्रकार इन ढूले-ढूलियों को पधराने का दिन होता है जब कुछ बच्चे अपने ढूले-ढूली को विधिपूर्वक किसी सरोवर अथवा कुए बावड़ी में ठण्डा कर आते हैं परन्तु चूंकि बच्चों का इनके साथ इतना अधिक आत्मीय भाव उमड़ पड़ता है कि वे अपने से इन्हें जुदा करना नहीं चाहते अत: ऐसी स्थिति में वे इन्हें अपने ही घरों में बन्द कर सुला देते हैं।

ढूली-फूत्यों की यह एक ही कला गृहस्थ जीवन की कई कलाओं का समन्वय प्रस्तुत कर बच्चों को उनके भावी जीवन का सुनहरा प्रशिक्षण प्रदान करती है। बच्चे इनके लिए क्या नहीं करते। अपनी मां-बहिनों के सहयोग से इन्हें तैयार करते हैं। इनके लिए अच्छे से अच्छे कपड़े बनाते हैं। उन कपड़ों को कौर-किनारी तथा लेरगोटों से सजाते हैं। उनके लिए लाले-मोती के जेवर तैयार करते हैं। अच्छी-अच्छी मिठाइयां बनाते हैं। पहले इन्हें खिलाते हैं फिर आपस में मिल बांटकर खाते हैं। इससे आपसी प्रेम, सौहार्द्र एवं भाईचारे का भाव पैदा होता है।

डॉ. भानावत ने बताया कि जब कहानी छह वर्ष की और तुक्तक तीन वर्ष का था तब दिन-रात अपनी गुड़िया के पीछे लगे रहते थे। अपने साथ वे उसे भी चाय पिलाते। खुद आम खाते तो उसकी एक चीर उनके मुंह पर भी रख देते। जब उनका मुंह गंदा हो जाता तो उसे वे जरा सा पानी लगाकर कपड़े से पौंछ देते। सोते समय वे उसे अपने साथ चिपकाकर सोते। गर्मी पड़ने पर भी वे उसे पूरा ओढ़ाते। मुंह ढक देते और फिर अचानक जब उन्हें ध्यान आता कि गर्मी तेज है तो वे उसके लिए पंखा चला देते। अपना तकिया उसके लगाकर कभी-कभी स्वयं तकिये बिना सो जाते। कुछ समय बाद कहानी उठती। यह जानकर कि उसकी ढूली रो रही है, तब उसे अपनी गोदी में ले दूध पिलाने का उपक्रम करती। फिर सुला देती और स्वयं भी अपनी नींद में खो जाती।

बच्चों में इनके प्रति वही भाव रहता जो स्वयं अपने प्रति होता है। गुड़िया कुछ नहीं खाती-पीती परन्तु जरा सा चम्मच उसके मुंह पर लगा देने मात्र से ही बच्चे यह समझ लेते कि उसने खूब सारा खा-पी लिया है। गुड़िया के सजीव और निर्जीव होने जैसी उनके दिमाग में कोई कल्पना नहीं होती। एक दिन तो कहानी ने अच्छा खासा साबून लगाकर अपनी गुड़िया को नहला ही दिया था।

ढूला-ढूली बनाने और उनके ब्याह रचाने की यह कला किसी समय बच्चों में बड़ा महत्त्व रखती थी। देवीलाल सामर ने इस सम्बन्ध में बड़े विस्तार से लिखा। उनके अनुसार - 'ढूला-ढूली बनाने की कला बच्चों के दैनिक जीवन में किसी समय इतना महत्त्व रखती थी और स्वयं पारिवारिक जन उसमें इतनी रूचि लेते थे कि उसकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इन ढूला-ढूलियों के लिए नानाप्रकार के कपड़े, किनोर आदि खरीदे जाते। स्वयं बच्चे उनके कपड़े सीते। उन पर गोटा-किनोर लगाते। जहां रंगाई की आवश्यकता होती, वे स्वयं ही रंग लेते। उसके सोने, बैठने के लिए गदरे, तकिये तथा पलंग बनाये जाते। उनके शृंगार के लिए मोतियों की मालाएं तथा माथे की अत्यन्त नयनाभिराम रखड़ी बनाई जाती। उनमें चमकीले कांच और सितारे लगाये जाते। हाथ-पांव के सभी जेवरों में न केवल मोतियों की लड़ियों बल्कि सोना-चांदी के तारों द्वारा स्वयं के हाथों से बनाई हुई कड़ियों का प्रयोग करते।

इस शृंगारित तैयारी से पूर्व बच्चे स्वयं अपनी शादियां तय कर लेते। उनके पीछे माता-पिताओं की पूर्ण सहमति एवं स्वीकृति रहती थी। बच्चे स्वयं बाजार से सब सामग्रियां खरीदते। उनका विधिवत् हिसाब रखते। घर की समस्त लिपाई-पुताई एवं सफेदी करते। जिस घर में ढूला-ढूली की शादी रचाई जाती उस पर स्वयं बच्चे चितराम , हाथी, घोड़े, कलश एवं आरतीधारिणी पुतलियां तथा चंवर और छत्रधारी द्वार-रक्षक बनाते। इस काम में आवश्यकतानुसार तत्सम्बन्धी प्रवीण कलाकारों से सहयोग लेते।

शादी के निमंत्रण अत्यन्त सुन्दर ढँग से कागजों पर स्वयं लिखकर अपने मित्रों में स्वयं बांटते। शादी से पूर्व और बाद के जितने भी औपचारिक एवं आनुष्ठानिक भोज आदि होते, उनके पकवान बच्चे स्वयं बनाते। ढूला के घर बरातियों के बैठने आदि की अत्यन्त कलात्मक व्यवस्था की जाती तथा ढूली के घर मांडा सजाया जाता। तोरण वांदने की सारी व्यवस्था की जाती तथा बच्चे स्वयं तोरण बनाते। दूल्हे के घर से बकायदा बरात सजाकर बच्चे दुल्हन के घर पर जाते, जहां तोरण की रस्म पूरी की जाती। अत्यन्त कलात्मक ढंग से सजाए हुए मंडप में ढूला-ढूली बिठाये जाते। हवन-यज्ञ आदि हुआ करते तथा कहीं-कहीं सम्पन्न घरों में तो यह विवाह ज्योतिषी द्वारा सम्पन्न कराया जाता।

उस समय यह भी धारणा थी कि ढूला-ढूली के अत्यन्त सफल एवं आनन्ददायी विवाह बच्चों के सुखद एवं सफल भावी वैवाहिक जीवन के द्योतक भी हैं। कहीं-कहीं तो इस सुखद कामना के लिए ढूला-ढूली का विवाह संस्कारवत भी अनिवार्य समझा जाता।

ढूला-ढूली का यह विवाह केवल एक ही दिन में समाप्त नहीं हो जाता। जिस तरह आज से कई वर्ष पूर्व राजस्थानी विवाहों में पूरा एक महीना लगता था उतनी ही अवधि ढूला-ढूली के विवाह में भी लगती थी। ये विवाह बहुधा गर्मी में रचाये जाते। काफी समय पूर्व विवाह की बातें शुरू हो जाती। पूर्ण निश्चय होने के बाद ढूला वाले अपने घर में विवाह की तैयारी करते और इसी तरह ढूली वाले के घर में भी सब साज-सज्जाएं जमाई जातीं। जेवर, वेशभूषा, मिठाई आदि का लेन-देन भी उसी तरह होता जिस तरह वास्तविक मानवी विवाह में होता। ढूला-ढूली के घर पर शादी के गीत लड़कियों द्वारा उसी तरह गाये जाते जिस तरह मानवी विवाहों में प्रौढ़ स्त्रियों द्वारा गाये जाते।

बालिकाओं को विवाह सम्बन्धी गीत याद करने पड़ते तथा उन्हें समस्त रीति-रिवाजों से अवगत करना पड़ता। ढूला-ढूली के ये विवाह किसी समय बच्चों के खाली जीवन के लिए प्राण थे। उनका सारा समय किसी न किसी उपयोगी रचनात्मक कार्य में लगा ही रहता था। अधिकांश में लड़कियां ही ये सब विवाह रचाती थीं तथा लड़के घर की बनावट, सफाई, पुताई तथा रंगाई आदि में मदद करते थे। यही नहीं, सारे घर के प्रौढ़ स्त्री-पुरुष भी इन ढूला-ढूली के विवाहों में व्यस्त हो जाते थे।'

-क्रमश :

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।